इकाई 9 धर्म सुधार*

इकाई की संरचना

9.0 उद्देश्य

इस इकाई को पढ़ने के बाद आप निम्नलिखित चीजों को समझ सकेंगे:

- धर्म सुधार की अवधारणा और इसकी ऐतिहासिक उत्पत्ति,
- धर्म सुधार की सामाजिक पृष्ठभूमि,
- धर्म सुधार का प्रसार,
- सामाजिक, राजनीतिक और आर्थिक क्षेत्रों में धर्म सुधार के प्रभाव।

* कुमारी नीतिका वर्मा, शोध विद्यार्थी, इतिहास संकाय, इग्नू

9.1 प्रस्तावना

धर्म सुधार को यूरोप के इतिहास में एक मील का पत्थर माना जा सकता है। यह चर्च के इतिहास में केवल एक घटना नहीं थी, जो पश्चिमी कैथोलिक चर्च का विखंडन या प्रोटेस्टेंट धर्मशास्त्र का उद्भव है। बल्कि, यह सोलहवीं और सत्रहवीं शताब्दी के यूरोप के सामाजिक और राजनीतिक माहौल में क्रांतिकारी बदलाव ले कर आया।

परिभाषा– पारंपरिक अर्थों में धर्म सुधार का अर्थ है रोमन कैथोलिक चर्च में मतभेद या उससे सम्बंध विच्छेद जो कि सदियों से यूरोप में पोप के तहत कार्यरत था और धर्म सुधार का एक ही हिस्सा था। इसने ईसाई धर्म के भीतर कई कट्टरपंथी और उदारवादी धाराओं का निर्माण किया, जैसे कि लूथरन, केल्विनिस्ट, पुरीटैन, एनाबैपिस्ट, एंग्लिकन, आदि।

उपक्रम– ईसाई चर्च ग्यारहवीं शताब्दी के मध्य तक प्रभावी रूप से एकीकृत था। हालांकि, पश्चिमी और मध्य यूरोप पोप के नियंत्रण में आया, जबकि बाइजंटाइन चर्च कुस्तुतुंनियाँ के धर्म प्रधान के प्रभाव में उभरा। वर्चस्व और चर्च की आय के सवाल पर दोनों प्रमुखों के बीच कड़वे टकराव थे। 1054 सी.ई. में ईसाई चर्च में विभाजन हुआ। तब से पश्चिमी चर्च को कैथोलिक (सार्वभौमिक) कहा जाने लगा और बाइजंटाइन साम्राज्य में चर्च को रूढ़िवादी चर्च के रूप में जाना जाने लगा।

कैथोलिक चर्च एक मजबूत बंधन था जिसने कई सामंती इकाइयों को धार्मिक एकरूपता प्रदान की। राजनीतिक एकता के अभाव में, चर्च ने सामाजिक संबंधों के स्थायीत्व में मदद की। पोप शासकों के आंतरिक, राजनीतिक और वित्तीय मामलों में हस्तक्षेप करते थे। एक तरह से कैथोलिक चर्च ने यूरोपीय सामंतवाद को एकता प्रदान की। मध्ययुगीन काल से सामंती संरचना के कमजोर पड़ने के कारण चर्च पर भी प्रभाव पड़ना भी लाजिमी था।

9.2 धर्म सुधार की उत्पत्ति

चौदहवीं और पंद्रहवीं शताब्दी में पोप की सत्ता को आध्यात्मिक नेतृत्व को देने में असफलता जिसके कारण कैथोलिक चर्च को संस्थागत समस्याओं का सामना करना पड़ा। समकालीन लेखन निर्विवाद रूप से बढ़ती भ्रष्टाचार और अक्षमता की स्थिति को दर्शाता है। चर्च के नेताओं ने व्यक्तिगत धर्मनिष्ठा के लिए लोगों की तृष्णा को संतुष्ट करने में असमर्थता दिखाई।

आर्थिक परिवर्तनों और सामंती संकट ने कैथोलिक चर्च पर वित्तीय भार डाला था। यह महत्वपूर्ण कारकों में से एक था जिसके परिणामस्वरूप पोप की सत्ता की आलोचना बढ़ी। पोप के पद ने अपनी व्यापक नौकरशाही संरचना और राजकोषीय प्रणाली विकसित की थी। पोप ने दूर-दराज के चर्चों के अधिकारियों से विभिन्न प्रकार के अंशदान प्राप्त किए। इनमें दसाँश (आय का एक दसवाँ हिस्सा पोप को भेजा जाना था), प्रथम फल (फसल की शुरुआत के साथ जुड़ा हुआ चढ़ावा), आदि शामिल थे। सभी अंशदानों में सबसे विवादित था क्षमा-पत्रों की बिक्री (चर्च को भारी भुगतान देने पर गंभीर पाप से क्षमा के पर्चे)। चर्च की आर्थिक समस्याओं ने ऊपरी और निचले पादरी के बीच बढ़ते अलगाव को जन्म दिया। उच्च अधिकारी जो कार्डिनल, बिशप आदि जैसे कुलीन वर्ग से आए थे, उन्होंने विशाल सम्पदा अर्जित की, जबकि निचले पादरी गरीब बने रहे और सामान्य-जन से आए।

9.3 सामाजिक पृष्ठभूमि

मध्ययुगीन दुनिया एक बंद समाज थी जिसपर सामंतवाद और कैथोलिक चर्च और उसके पुजारियों का प्रभुत्व था। चर्च जीवन का केंद्र बिंदु था और जन्म से लेकर मृत्यु तक लोगों के जीवन के हर पहलू को छूता था। मध्य युग के अंत में महत्वपूर्ण घटनाक्रम हुए, जिसने

धर्म सुधारकों को आधार दिया। यह तर्क दिया जाता है कि जनसंख्या में गिरावट कृषि उपज के साथ-साथ विर्निमाण में गिरावट थी। इसने सामंती ताने-बाने के समाज के परिवर्तन के कार्य को तेज कर दिया। लगान के गिरावट के कारण राजस्व में जो गिरावट हुई उससे भूस्वामी भी गंभीर रूप से प्रभावित हुए थे। पश्चिमी जर्मनी में, विशेष रूप से आर्थिक कारकों ने जर्मनी के कुलीनों को क्षेत्रीय राजाओं पर अधिक निर्भर बना दिया, जिनके अधिकार में लगातार वृद्धि हो रही थी। कारीगर और किसान विशेष रूप से कम मजदूरी और उच्च कीमतों से त्रस्त थे। इन तीव्र आर्थिक संकटों, भटकाव और आक्रोश को मार्टिन लूथर और केल्विन की तर्कसंगत अनुरोध में अभिव्यक्ति मिली। मार्क्स और एंगेल्स ने धर्म सुधार की अवधि को एक सामाजिक परिवर्तन के रूप में देखा जो पूँजीपति वर्ग का उदय है। धर्म सुधार आम लोगों के शिक्षित आभिजात्य वर्ग के उत्थान को दर्शाता है, जो अविश्वसनीय पादरियों के आध्यात्मिक और प्रशासनिक कार्यों को संभालने के लिए तैयार और उत्सुक था। सबसे महत्वपूर्ण धर्म-वैधानिक परिवर्तन था– मोक्ष में संस्कारों की भूमिका में कमी जिसने पादरी के अधिकार और प्रतिष्ठा को कम किया और लोगों की स्वतंत्रता और आत्मविश्वास में वृद्धि की। पवित्र रोमन सम्राट की शक्तियों की कमी ने पोप की जागीरों को कमजोर कर दिया। धर्म सुधार, हालांकि धार्मिक कारकों के कारण, उस समय की धर्मनिरपेक्ष आवश्यकताओं द्वारा संभव बनाया गया था। गैर-धार्मिक तत्व में पुनर्जागरण धर्म सुधार का एक कारण था जिसने परिणामस्वरूप सत्ता के प्रति एक आलोचनात्मक दृष्टिकोण दिया। प्रोटेस्टेंट धर्म सुधार पर मानवतावादियों के आंदोलन का प्रभाव ऐतिहासिक बहस का विषय रहा है। धर्म सुधार को मानवतावाद के उदय के तार्किक और अनिवार्य परिणाम के रूप में देखा गया था। पुनर्जागरण को स्वीकारने से, पोप का पद अपने स्वयं के अंत का कारण बना क्योंकि इससे गंभीर आलोचना के साथ बौद्धिक गतिविधि में वृद्धि हुई। पुनर्जागरण के विचारों ने धर्म सुधार को गति दी। इतावली मानवतावाद ने त्याग के मठवासी सदगुणों को स्पष्ट रूप से खारिज कर दिया और धर्मनिरपेक्ष दृष्टिकोण को बढ़ावा दिया। जैसा कि एलिस्टर मैकग्राथ बताते हैं, इस प्रकार, सामाजिक और वैचारिक कारकों के एक जटिल विषम साँचें से धर्म सुधार उत्पन्न हुआ। राष्ट्रवाद के उदय ने, दक्षिण जर्मन राज्यों और स्विस शहरों की बढ़ती राजनीतिक शक्ति ने, व्यक्तिगत व्यक्तित्वों के उद्भव ने, बौद्धिक आंदोलनों और चर्च में बढ़ते संकटों के समय की धार्मिक जागरूकता ने धर्म सुधार आंदोलन का मार्ग प्रशस्त किया, हालांकि यह हर क्षेत्र में एक दूसरे से अलग था ।

9.4 जर्मनी में धर्म सुधार

जर्मनी की राजनीति और सामाजिक आर्थिक स्थिति प्रोटेस्टेंट धर्म सुधार के उद्भव और प्रसार के लिए अनुकूल थी। मैक्स स्टिनमेट्स का सुझाव है कि जर्मनी की आर्थिक स्थिति वाणिज्यिक उत्पादन में तेजी द्वारा परिलक्षित थी, फिर भी ग्रामीण इलाकों में सामंतवाद मजबूत था। पादरी अक्सर किसानों के बीच विद्रोह की भावना को बढ़ावा देने वाले जमींदार की भूमिका निभाते थे, और कैथोलिक चर्च अभी भी जर्मनी में भूमि के एक बड़े हिस्से का स्वामी था। पंद्रहवीं शताब्दी के अंत तक चर्च के शोषण के खिलाफ एक मजबूत भावना विकसित होने लगी। इसलिए, पोपवाद विरोध और पादरीवाद का विरोध जर्मन क्षेत्र की दो मुख्य विशेषताएँ बन गए।

मार्टिन लूथर ने 1520 के अपने प्रसिद्ध धर्म सुधारक ग्रंथ – *एन अपील टू जर्मन नोबेलिटी* में पोप और पादरियों के दुरुपयोगों को सूचीबद्ध किया। मानवतावाद के उदय ने व्यक्तिगत चेतना और मानव व्यक्तित्व के विचार पर जोर दिया, जिसने औचित्य के सिद्धांत में नई रुचि पैदा की कि कैसे मनुष्य भगवान के साथ एक सम्बंध में प्रवेश कर सकता है। उन्होंने अपने उदारवादी दृष्टिकोण और क्षमा-पत्रों की बिक्री के प्रचलन के खिलाफ लोकप्रिय आक्रोश के कारण व्यावहारिक सफलता हासिल की। क्षमा-पत्रों की बिक्री धन्यवाद की अभिव्यक्ति और

धन या दान के उपहार के रूप में शुरू हुई । प्रारंभ में क्षमा का अर्थ था चर्च द्वारा नैतिक पाप के लिए लगाई गई सजा में छूट। बाद में यह केवल चर्च की ही नहीं बल्कि ईश्वर द्वारा नरक (पाप मोचन स्थल) के दंड में छूट बन गया। इस प्रकार भगवान की कृपा व्यावसायिक रूप से पोप के एजेंटों द्वारा ब्रांडेनबर्ग के अल्ब्रेक्त और फुगर्स के बैंकिंग घरानों के माध्यम से बेची जा रही थी।

9.5 मार्टिन लूथर और प्रोटोस्टेंट धर्म सुधार

मार्टिन लूथर (1438-1546) किसान पृष्टभूमि से थे। उनका धर्म की ओर रुझान था और 1505 में उन्होंने एक भिक्षु बनने का फैसला किया। वह विटेनबर्ग विश्वविद्यालय में धर्मशास्त्र के प्रोफेसर थे। लूथरन रिफॉर्मेशन सरल प्रश्न से शुरू हुआ– 'ईश्वर की क्षमा पाने के लिए क्या करना चाहिए।'

1517 में, मार्टिन लूथर ने विटेनबर्ग में चर्च के दरवाजे पर अपने नाइनटी फाइव थीसिस चिपका दिया और सीधे तौर पर क्षमा-पत्रों की बिक्री को चुनौती दी। उनके कार्यों ने तुरंत पूरे यूरोप का ध्यान आकर्षित किया। एंगेल्स ने लूथर के रोमन कैथोलिक चर्च के खिलाफ विद्रोह को 'लूथरस लाइटेनिंग स्ट्रक होम' (लूथर की बिजली घर पर गिरी) के रूप में वर्णित किया।

थीसिस में उन्होंने तीन तर्क प्रस्तुत किए– 1) संबंधित वित्तीय दुर्व्यवहार, 2) सिद्धांतों के दुरुपयोग पर ध्यान देना, और 3) धार्मिक मुद्दों पर हमला।

1520 की गर्मियों में, लूथर ने अपनी '*थ्री ट्रीटीस*' प्रकाशित की। इसमें, 1) जर्मन राष्ट्र के ईसाई कुलीन वर्ग को संबोधित था जिसमें जर्मन प्रांतों को चर्च में धर्म सुधार के लिए आह्वान किया था। यहाँ, उन्होंने धर्म सुधार सिद्धांत 'प्रेइस्टहूड ऑफ आल बिलीवर्स' के बारे में बताया कि सभी ईसाई चर्च में एक समान है। 2) लूथर ने चर्च की पवित्र-संस्कार व्यवस्था पर सवाल उठाया और घोषणा की कि सात के बजाय केवल तीन पवित्र संस्कार हैं बपतिस्मा, विवाह और उरिव्रज्म, 3) सबसे उग्र परिवर्तन यह था कि लूथर ने ईसाई आदमी को मुक्ति प्रदान करने में चर्च और पुजारी की भागीदारी से इनकार किया। उन्होंने 'जस्टिफिकेशन बाय फेथ' के सिद्धांत से धार्मिक और नैतिक निहितार्थ का विकास किया।

जब पोप ने बहिष्कार का एक आदेश जारी किया (एक रोमन कैथोलिक चर्च उद्घोषणा), तो लूथर ने सार्वजनिक रूप से उसे जला दिया। 1521 में, पवित्र रोमन सम्राट ने लूथर को मुकदमें का सामना करने के लिए वर्म्स में डाइट (संसद) के सामने उपस्थित होने के लिए कहा। लूथर ने अपने पक्ष को त्यागने से इनकार कर दिया और इस तरह वह जर्मनी में सर्वोच्च सत्ता द्वारा गैरकानूनी घोषित कर दिया गया। वह जीवनभर मौत की सजा के अधीन रहे लेकिन वह एलेक्टर ऑफ सक्सोनी– फ्रेडरिक द्वारा परिरक्षित और समर्थित थे, जो व्यक्तिगत रूप से एक अकादमिक केंद्र में पोप के हस्तक्षेप को पसंद नहीं करते थे। लूथर ने छुपते हुए इरास्मस के ग्रीक पाठ से जर्मन भाषा में नए नियम (न्यू टेस्टामैंट) का अनुवाद किया। उनके विचारों के समर्थकों को लूथरन या प्रोटेस्टेंट कहा जाने लगा।

बोध प्रश्न-1

1) धर्म सुधार शब्द से आप क्या समझते हैं?

....

....

....

2) जर्मनी में धर्म सुधार के उभरने के बारे में चर्चा करें।

....

....

....

9.6 लूथर और कृषक युद्ध

पोप के चर्च के साथ लूथर टकराव ने जर्मन किसानों को 1525 में विद्रोह करने के लिए प्रेरित किया। किसान युद्ध एक समन्वित विद्रोह नहीं था और इसमें अनेक नेता थे। थोड़े समय के लिए थॉमस मुन्जर ने आंदोलन का सफलतापूर्वक नेतृत्व किया। उन्होंने सांमती भू-स्वामियों और चर्च शोषण के खिलाफ संघर्ष का आयोजन किया। कार्रवाई के लिए उनका 'बारह अनुच्छेद' एक कार्यक्रम था, जो काफी उदारवादी था और पूरी तरह से सामंती व्यवस्था को नष्ट करने का उद्देश्य नहीं रखता था। मार्क्सवादी लेखों से पता चलता है कि किसान युद्ध सामाजिक-आर्थिक संघर्ष की अभिव्यक्ति था और बुर्जुआ क्रांति का एक शुरुआती चरण था, जबकि धर्म सुधार इसकी वैचारिक अभिव्यक्ति थी। स्टीनमेट्ज का तर्क है कि यह मार्टिन लूथर द्वारा शुरू किया गया एक राष्ट्रीय आंदोलन था, जिसके द्वारा पोप चर्च के खिलाफ मध्य पूँजीपति वर्ग के नेतृत्व में सभी वर्गों (चर्च-सम्बंधी को छोड़कर) को साथ लाया गया था। दूसरी ओर, पीटर ब्लिकल का सुझाव है कि किसान युद्ध सामाजिक और भू-सम्पत्ति सम्बंधों को पुनः आकार देने और सामंतवाद के संकट को दूर करने का एक क्रांतिकारी प्रयास था। हालांकि, किसान युद्ध पोप शक्ति के साथ लूथर के बहादुर टकराव से प्रेरित था, लूथर कुलीन वर्ग का समर्थन खोना नहीं चाहता था, जिनको किसानों ने धमकी दी थी और इसलिए उन्होंने विद्रोही किसानों पर जोरदार हमला किया। लूथर का राजनीतिक सत्ता का सिद्धांत किसानों के युद्ध की पृष्ठभूमि के खिलाफ विकसित हुआ। लूथर ने शिकायतों के निपटारे के साधन के रूप में विद्रोह के सभी रूपों की निंदा की। उसने तर्क दिया कि एक सच्चे ईसाई को गलत को सहना चाहिए और राजा की सत्ता से लड़ने के बजाय बुराई को सहना चाहिए। इसलिए लूथर के विचारों को शासकों के एक बड़े वर्ग ने समर्थन दिया।

9.6.1 लूथर का धर्म

लूथर का धर्म सुधार इस सवाल पर शुरू हुआ कि किसी व्यक्ति को बचाने के लिए क्या करना चाहिए। इससे 'जस्टिफिकेशन बाय फेथ' का उनका सिद्धांत विकसित हुआ। लूथर का मानना था कि चर्च ने क्षमा की बिक्री जैसी प्रथाओं को अपनाकर धर्म-सिंद्धात और ईसाई धर्म के सच्चे सार को गलत समझा था।

लूथर के संगी प्रोफेसर मेलानक्थन ने लूथर के धर्म को एक संगठनात्मक संरचना और एक निश्चित आकार दिया था । उन्होंने लूथर को तीन पुस्तिका तैयार करने और ईसाइयों का एक नया संप्रदाय स्थापित करने में मदद की। लुथरन नामक ईसाइयों के इस नए समूह ने आस्था की सर्वोच्चता में विश्वास किया जिसने पुजारियों की विशेष स्थिति को उनके रहस्यमय कार्यों के साथ नष्ट कर दिया। लूथर ने घोषणा की कि प्रत्येक ईसाई अपना पुजारी था। लूथर के लिए चर्च की बाहरी व्यवस्था का महत्व गौण था। स्वतंत्रता एक आंतरिक आस्था थी और ना की एक बाहरी सामाजिक और राजनीतिक स्वतंत्रता थी। उसने पोप से लेकर पुजारियों तक चर्च के अधिकारियों के पदानुक्रम को समाप्त कर दिया। लूथरन आंदोलन ने ईसाई चर्च के भीतर एक तीव्र विभाजन किया और पोप के वर्चस्व को नष्ट कर दिया। लूथरवाद की सामान्य लोकप्रियता को इस तरह से प्रदर्शित किया गया था कि लोगों ने नैतिक मुद्दों के साथ एक प्रकार के सिद्धांत के रूप में इसे स्वीकार किया और इसने

आर्थिक धर्म सुधारों का भी सुझाव दिया जिसने पोप के पद को प्रभावित किया और देश की आर्थिक व्यवस्था में परिवर्तन किया।

इस प्रकार, हम कह सकते हैं कि जर्मनी में धर्म सुधार वास्तव में एक महान विकास नहीं था, बल्कि इसमें कई अलग-अलग स्थानीय धर्म सुधार शामिल थे। जिनमें से प्रत्येक को नगर परिषद या राजकुमार द्वारा आयोजित किया गया था जो अलग-अलग धार्मिक सिद्धांतों की देखभाल करते थे और इसे बढ़ावा देने की कोशिश करते थे।

9.7 हुल्द्रिख और उलरिख ज़्विंगली

उलरिख ज़्विंगली (1484-1531) लूथर के समकालीन थे जिन्होंने ज्यूरिख के स्विस संघ में धार्मिक धर्म सुधारों को अंजाम दिया। ज़्विंगली का धर्म सुधार मानवतावादी विचारों पर आधारित था। उन्होंने अपने प्रचार के दौरान नए विचार प्रस्तुत किए। उनका वास्तविक धर्म सुधार 1520 में शुरू हुआ और पाँच साल के भीतर पूरा हुआ।

ज़्विंगली के तहत स्विस धर्म सुधार ने चर्च के कॉर्पोरेट (सामूहिक) स्वरूप पर जोर दिया। यह माना जाता था कि पादरी और आम आदमी एक 'पवित्र समुदाय' का गठन करते थे। ज्यूरिख में धर्म सुधार का एक महान सामाजिक प्रभाव था। मठों को समाप्त कर दिया गया और मठ की दानशीलता एक सामूहिक सरोकार बन गई। चर्च और नैतिक अनुशासन का चर्च और राज्य द्वारा संयुक्त रूप से पर्यवेक्षण किया जाना था। मिलकर उन्हें 'पवित्र समुदाय' का गठन करना था।

लूथरन और ज़्विंगली के धर्म सुधार के बीच कुछ समानताएँ थीं। दोनों ने मध्ययुगीन पवित्र संस्कारों को खारिज कर दिया और भगवान को महत्व दिया। इन दोनों ने विभिन्न कारणों से शिशु बपतिस्मा की पारंपरिक प्रथाओं को बरकरार रखा।

9.8 अनाबैप्टिस्ट्स

अनाबैप्टिस्ट्स ने शिशु बपतिस्मा के सिद्धांत को खारिज कर दिया और माना कि सच्चा ईसाई वह है जिसने एक वयस्क के रूप में फिर से बपतिस्मा लिया था। वे 'जस्टिफिकेशन बाय फेथ' के सिद्धांत में विश्वास करते थे और यह मानते थे कि केवल वे जो ईश्वर में दृढ़ विश्वास रखते हैं वे सच्चे चर्च के सदस्य बन सकते हैं और उन्होंने अन्य सभी को बाहर कर दिया।

जैसा कि शिशु बपतिस्मा को प्रोटेस्टेंट और कैथोलिक दोनों द्वारा एक पवित्र संस्कार माना जाता था, अनाबैपिस्टों के तर्क ने उनके सिद्धांत के लिए खतरा पैदा किया। इसके अलावा, अनाबैप्टिस्टों ने नागरिक सरकार में पहचान या भाग लेने, निष्ठा की शपथ लेने या सेना में सेवा करने से और सरकार में करों का भुगतान करने से इनकार कर दिया। उनका तर्क था कि सच्चे मसीहियों को कभी भी तलवार का इस्तेमाल नहीं करना चाहिए या कानून की अदालतों में नहीं जाना चाहिए और न ही अदालती कार्य करना चाहिए। इन समूहों ने गरीब लोगों की आकांक्षाओं को प्रतिबिंबित किया और वे मसीह के दूसरे आगमन की तैयारी के लिए सभी संस्थाओं में सामाजिक धर्म सुधार चाहते थे।

जहाँ कहीं भी अनाबैपिस्ट बस गए, स्थानीय शासकों ने उन्हें प्रताड़ित किया, प्रोटेस्टैंटो ने उन्हें पानी में डुबो दिया और उन्हें मौत के घाट उतारने का आदेश दिया जबकि कैथोलिकों ने उन्हें जिंदा जला दिया। उनके प्रमुख नेताओं जैसे बाल्थासार हुमायेर और जैकब हटरहेड ने कुछ कुलीनों को अपने विश्वास में बदल दिया, लेकिन अंत में उन्हें यातना और मौत का सामना करना पड़ा। लेकिन लोकतांत्रिक विचार और आर्थिक समानता की उनकी परंपरा बनी रही।

9.9 फ्रांस में धर्म सुधार

धर्म सुधार के संबंध में फ्रांस की स्थिति जर्मनी के समान थी। हालांकि सरकार का विकेंद्रीयकरण इतना महान और मजबूत नहीं था। उदारवादी कैथोलिकों के प्रयासों के कारण जर्मनी की तुलना में फ्रांस में चर्च के धर्म सुधार के लिए आधार बेहतर तरीके से तैयार किया गया था। लूथर के विचारों को जल्द ही आयात किया गया और व्यापक रूप से पढ़ा गया। सबसे मजबूत विरोध पेरिस की संसद से हुआ। फ्रान्सिश I ने अपनी विदेश नीति की जरूरतों के लिए देशी धार्मिक नीति को गौण कर दिया। 1560 के दशक में, फ्रांस के फ्रान्सिश I ने पोप लियो X के साथ कॉनकॉर्डाट ऑफ बोलोग्ना का समापन किया, जिसके द्वारा ताज को फ्रांसीसी पादरी वर्ग की नियुक्तियों का वास्तविक नियंत्रण दिया गया था।

फ्रांस में, धर्म सुधार आंदोलन कैल्विन और उनके दर्शनशास्त्र से बहुत प्रेरित था।

9.10 जॉन कैल्विन

फ्रांस के जॉन कैल्विन (1509-64) धर्म सुधारकों की दूसरी पीढ़ी के थे। यूरोप के विभिन्न हिस्सों पर उनके शक्तिशाली प्रभाव के कारण उन्हें सबसे प्रभावशाली धर्म सुधारक माना जाता है। केल्विन एक विद्वान थे और उनका तार्किक मस्तिष्क था। उनके कई विचार बाइबल से प्राप्त हुए लेकिन वे सेंट ऑगस्टीन से भी प्रभावित थे। शासकों द्वारा किए गए धार्मिक प्रताड़ना के कारण केल्विन को फ्रांस छोड़ने के लिए मजबूर किया गया था।

कैल्विन अपने समय के इरास्मस और अन्य मानवतावादियों से प्रभावित थे। उन्होंने लूथर के साथ आस्था द्वारा मुक्ति में विश्वास साझा किया और भगवान के साथ मनुष्य के प्रत्यक्ष संचार के सिद्धांत का समर्थन किया। परमेश्वर की परम संप्रभुता पर उनके जोर ने उनकी शिक्षाओं को एक अनूठा चरित्र दिया।

लूथर की तरह, उन्होंने भी केवल दो पवित्र संस्कारों को बरकरार रखा– बपतिस्मा और यूखरिस्ट। केल्विन का पहला संस्करण द इंस्टीट्यूट्स ऑफ द क्रिश्चियन रिलिजन (1536) प्रोटेस्टेंट धर्मशास्त्र का सबसे प्रभावशाली रचना बन गई, जिसने उनकी तेज बुद्धि और कानूनी दिमाग को प्रतिबिंबित किया। पूर्व-नियतिवाद के सिद्धांत ने केल्विन के सामाजिक विचार के सबसे महत्वपूर्ण तत्व का गठन किया। माना जाता है कि उनके सामाजिक विचारों से अप्रत्यक्ष रूप से व्यापारिक गतिविधियों को बढ़ावा मिला।

9.10.1 कैल्विनवाद का प्रसार

प्रोटेस्टेंटवाद का प्रकार जो आधुनिक सामुदायिक और धर्म सुधार चर्चों के लिए आधार था, वह कैल्विनवाद था। ज्विंगली की मृत्यु के बाद कैल्विनवाद की स्थापना की गई थी। नए स्विस प्रोटेस्टेंटवाद को नेतृत्व एक फ्रांसीसी जॉन कैल्विन (1509-34) द्वारा प्रदान किया गया था। कैल्विनवादियों की नैतिकता गतिशील और सामाजिक थी। लूथर की विचारधारा उत्तरी जर्मनी और स्कैंडेनेविया में अधिक सफल थी क्योंकि यह इन क्षेत्रों के शासकों के अनुकूल थी। लेकिन कैल्विनवाद ने उन राज्यों में जड़ें जमा लीं, जहाँ उसने मौजूदा राजनीतिक और धार्मिक प्रतिष्ठानों का जोरदार विरोध किया। कैल्विनवाद उत्तरी नीदरलैंड और जर्मन राज्यों का आधिकारिक धर्म था। इसने समाज और वित्त, उद्योग और वाणिज्य के विकास को सीधे प्रभावित किया। कैल्विनवाद का आर्थिक महत्व लंबे समय तक विवाद का कारण रहा है। कैल्विनवादी राजनीतिक विचार ने स्कॉटलैंड में राजशाही के नियंत्रण को तोड़ने और कैथोलिक और कुलीन पादरियों की शक्ति को तोड़ने के लिए मध्यम वर्ग के प्रयास को मजबूत किया। इसलिए कैल्विनवाद ने कुलीनों से अनुयायियों को जीत लिया और इसे कुलीन परिवारों से समर्थन प्राप्त था। फ्रांसीसी केल्विनवादी कहे जाने वाले हुगुएनोट विशेष रूप से दरबारों और संसदों में मजबूत थे।

9.11 इंग्लैंड में धर्म सुधार

जब जर्मनी और फ्रांस में धर्म सुधार आंदोलन पहले ही अपनी जड़ें जमा चुका था, तब इंग्लैंड में भी अपना सुधार-आंदोलन दिखा। शुरुआत धार्मिक के बजाय राजनीतिक थी। यह एक विड़म्बना थी कि अंग्रेजी धर्म सुधार की शुरुआत उसी शासक ने की थी – हेनरी VIII (1509–47), जो मार्टिन लूथर के धर्म सुधारों के प्रबल आलोचक थे। हेनरी VIII अपनी पत्नी कैथरीन से तलाक लेना चाहता था जो एक स्पेनिश राजकुमारी थी लेकिन पोप इसे मंजूर नहीं कर सकता था क्योंकि कैथोलिक चर्च में तलाक की अनुमति नहीं थी और इस तथ्य के कारण भी कि रोम के शहर पर स्पेनिश सम्राट की सेना का नियंत्रण था। पोप उसके खिलाफ नहीं जा सका। हेनरी तीन साल के इंतजार के बाद बेसब्र हो गए, और उन्होंने मामलों को अपने हाथ में लेने का फैसला किया। एक अधीनस्थ-संसद के माध्यम से (जिसे धर्म सुधार संसद 1529-34 भी कहा जाता है), उन्होंने पोप के साथ सभी संबंधों को समाप्त कर दिया। उन्होंने पोप की सत्ता को अस्वीकार कर दिया और 1534 में एंग्लिकन चर्च की स्थापना की जिसमे राजा को सर्वोच्च प्रमुख घोषित किया । हेनरी के तहत परिवर्तन मठों का दमन और बाइबिल का स्थानीय भाषा में उपयोग था।

धर्म सुधार ने अंग्रेजी राजतंत्र को मजबूत करने और राष्ट्रीय चर्च बनाने में मदद की। इस प्रकार हम कह सकते हैं कि अंग्रेजी धर्म सुधार अन्य देशों से काफी अलग था क्योंकि यहाँ शासकों ने व्यक्तिगत कारणों से इसे शुरू करने की पहल की थी। इसे राजनीतिक साधनों के माध्यम से लागू किया गया था। एंग्लिकन चर्च सेटलमेंट (1559) किसी अति से बचने और प्रोटेस्टेंटवाद और कैथोलिकवाद के बीच एक मध्य मार्ग को अपनाने का एक प्रयास था।

9.12 प्रभाव

सोलहवीं शताब्दी का यूरोपीय धर्म सुधार यूरोप के राजनीतिक और सामाजिक आर्थिक जीवन पर प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से प्रभावी होने के साथ एक जटिल और विषमरूपीय आंदोलन था। चूंकि ईसाई धर्म शासकों के जीवन से जुड़ा हुआ था, इसलिए उन पर इसका कुछ असर होना तय था।

9.12.1 राजनीतिक प्रभाव

प्रोटेस्टेंट धर्म सुधार ने राज्य और चर्च के बीच संबंधों की विभिन्न धारणाओं का उत्पादन किया। धर्म सुधार के पहले परिणामों में से एक कैथोलिक चर्च का कई भागों में टूटना था जो अत्यधिक संगठित थे और उन्होंने राजनीतिक, नैतिक और सामाजिक व्यवहार के सख्त मानदंडों को निर्धारित किया।

प्रोटेस्टेंटवाद ने अप्रत्यक्ष रूप से राजनीतिक एकता के विचार में योगदान दिया। कुछ इतिहासकारों ने यह भी तर्क दिया है कि प्रोटेस्टेंटवाद ने यूरोपीय राष्ट्र राज्यों के स्वाभाविक विकास को चिह्नित किया है।

प्रोटेस्टेंटवाद की व्याख्या उभरते राष्ट्र राज्यों की अवधारणा के साथ-साथ राष्ट्रीय पहचान उभरने के उत्प्रेरक के रूप में की गई थी।

9.12.2 सामाजिक प्रभाव

प्रोटेस्टैंटों ने मानव जीवन के केंद्र में परिवार को रखा और पति और पत्नी के बीच आपसी प्रेम पर जोर दिया। मध्ययुगीन काल से अधिकांश यूरोपीय लोगों के रोजमर्रा के जीवन में धर्म ने बहुत बड़ी भूमिका निभाई। प्रोटेस्टेंट और कैथोलिक धर्म सुधार दोनों ने लोकप्रिय संस्कृति को, लोकप्रिय अनुष्ठानों और त्योहारों को बदलने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

धर्म सुधार ने कला और संगीत में नई रचना को भी प्रेरित किया। लूथर एक कला की प्रशंसा करता है और भगवान के शब्द के बाद संगीत को रखता है। हालांकि, स्विट्जरलैंड में ज्विंगली और केल्विन इसके खिलाफ थे। वे संगीत को व्याकुलता का स्रोत मानते थे और पूजा के शुद्ध रूप पर जोर देते थे।

कैथोलिक धर्म सुधार 'बारोक' नामक कला की नई शैली के संरक्षण का एक महत्वपूर्ण स्रोत बन गया, जो पुनर्जागरण काल में विकसित हुई थी।

9.12.3 आर्थिक प्रभाव

धर्म सुधार को कभी-कभी एक क्रांतिकारी घटना के रूप में देखा जाता है क्योंकि यह सामंतवाद के लिए एक नए वर्ग की चुनौती का प्रतिनिधित्व करता है। कुछ इतिहासकारों के अनुसार, यह धार्मिक व्यक्तिवाद मानवतावाद के बौद्धिक व्यक्तिवाद का एक महत्वपूर्ण हिस्सा था और यह पूँजीवाद के विकास को प्रोत्साहित करता है।

एम. जे. कित्च ने कहा कि ''ऐतिहासिक रूप से प्रोटेस्टेंटवाद और पूँजीवाद के बीच एक मजबूत संबंध प्रतीत होता है।'' यह सम्बंध बहुत बहस का विषय रहा है। मैक्स वेबर, जर्मन समाजशास्त्री और अर्थशास्त्री इस संबंध में विस्तार से सुझाव देने वाले पहले लोगों में से एक थे। वह प्रोटेस्टेंट नैतिकता और पूँजीवाद की भावना के बीच एक स्पष्ट संबंध बताता है। उनके शब्दों में, उन्होंने स्पष्ट रूप से कहा है कि धर्म सुधार से पहले देशों की आर्थिक प्रगति को प्राप्त करना मुश्किल था।

वेबर प्रोटेस्टेंटवाद और पूँजीवाद के बीच कार्य-कारण संबंध बताते हैं कि कैसे प्रोटेस्टैंट आदर्शकारी विचारों ने एक मानसिक और बौद्धिक वातावरण बनाया जिसमें पूँजीवाद विकसित हुआ।

उनकी रचना *रिलिजन एंड दी राइज ऑफ कैपिटलिज्म* ने अमूर्त वाक्यांश 'स्पिरिट ऑफ कैपिटलिज्म' को समाप्त किया। दूसरे उन्होंने पूँजीवाद के आर्थिक पहलुओं पर जोर दिया, इसे सामाजिक आध्यात्मिक ढाँचे से बाहर निकाला।

क्रिस्टोफर हिल ने प्रोटेस्टेंटिज्म और पूँजीवाद के बीच द्विभार्गी घनिष्ठ सम्बंध के टॉनी के सिद्धांत का भी समर्थन किया। हिल के अनुसार, प्रोटेस्टेंटिज्म ने अस्थिर सिद्धांतों का एक समुच्चय प्रदान किया, जिसने ''पहले के समय के कठोर वैचारिक ढाँचें'' की मजबूत पकड़ को तोड़ने में मदद की।

बोध प्रश्न-2

1) लूथर और केल्विन के विचारों के प्रसार पर चर्चा करें।

....

....

2) धर्म सुधार के सामाजिक, राजनीतिक और आर्थिक प्रभाव की चर्चा करें।

....

....

9.13 सारांश

इस प्रकार, यह कहा जा सकता है कि धर्म सुधार ने कई क्षेत्रों को अपनाया – दोनों नैतिकता और चर्च और समाज की संरचनाओं में सुधार ईसाई अध्यात्म की पुनर्व्याख्या और उसके सिद्धांत का सुधार। धर्म सुधार आंदोलनों की लोकप्रियता को सिर्फ धार्मिक प्रकाश में ठीक

से नहीं समझा जा सकता। बल्कि इन्हें अपने ऐतिहासिक, राजनीतिक, सामाजिक और आर्थिक संदर्भ में रखना होगा। धर्म सुधार रोमन कैथोलिक चर्च में दुरुपयोगों के खिलाफ निर्देशित एक आंदोलन से कहीं अधिक था। यह मध्ययुगीन अतीत में गहराई से दबी हुई जड़ों के साथ एक जटिल स्थिति की परिणति थी।

9.14 शब्दावली

कृषक युद्ध : जर्मन कृषक युद्ध 1524-25 के बीच मध्य यूरोप में व्यापक रूप से लोकप्रिय विद्रोह थे। आभिजात्य वर्ग के तीव्र विरोध और उत्पीड़न के कारण विद्रोह विफल रहे।

शिशु बपतिस्मा : प्रोटेस्टैंटों और कैथोलिक दोनों द्वारा प्रचलित बपतिस्मा छोटे बच्चों का नामकरण करने का व्यवहार। शिशु बपतिस्मा को कुछ विश्वास परंपराओं में नामकरण के रूप में भी जाना जाता है।

9.15 बोध प्रश्नों के उत्तर

बोध प्रश्न-1

1) भाग 9.1 और 9.2 देखें।

2) भाग 9.4 देखें।

बोध प्रश्न-2

1) भाग 9.5, 9.6, 9.10 और उप-भाग 9.10.1 देखें।

2) उप-भाग 9.12.1, 9.12.2, 9.12.3 देखें।